प्रेमचन्द

मुक्ति मार्ग

एक लघु कथा

comicsmylife.blogspot.in

प्रेमचन्द (1880-1936) को आधुनिक हिन्दी और उर्दू साहित्य के अग्रणी कहानीकारों में माना जाता है। उन्होंने 300 कहानियां और 12 उपन्यासों की रचना की। इनकी प्रथम कहानी कानपुर की 'ज़माना' पत्रिका में उर्दू में प्रकाशित हुई। 1914 में प्रेमचन्द ने हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया और उनकी रचनाओं में जो ताज़गी और प्रासंगिकता अपने रचना-काल के समय थी, वह आज भी है।

...

'सरल भाषा का प्रयोग और रोचक ढंग से कहानी सुनाना प्रेमचन्द के लेखन की अहम विशेषता रही है। ...उनकी एक और विशेषता है कि उन्होंने अपनी रचना में संस्कृतनिष्ठ हिन्दी की जगह बोलचाल की आम भाषा का प्रयोग किया है।'

— हिन्दुस्तान टाइम्स

'प्रेमचन्द ने कथा की बारीकियों पर कब्ज़ा करने की उल्लेखनीय क्षमता दिखाई।'

— आलोक राय, दि स्टेटसमैन

'प्रेमचन्द भारत है... यदि आपने प्रेमचन्द नहीं पढ़ा तो आप बहुत कुछ से वंचित हैं।'

— दि हिन्दू

comicsmylife.blogspot.in

मुक्ति मार्ग

एक लघु कथा

ओरिएंट पब्लिशिंग

comicsmylife.blogspot.in

मुक्ति-मार्ग

सपिाही को अपनी लाल पगड़ी पर, सुन्दरी को अपने गहनों पर और वैद्य को अपने सामने बैठे हुए रोगयिों पर जो घमंड होता है, वही कसिान को अपने खेतों को लहराते हुए देखकर होता है। झींगुर अपने ऊख के खेतों को देखता, तो उस पर नशा-सा छा जाता। तीन बीघे ऊख थी। इसके 600 रु. तो अनायास ही मलि जायेंगे। और जो कहीं भगवान् ने डाँड़ी (तराजू की डंडी) तेज कर दी, तो फरि क्या पूछना! दोनों बैल बुड्ढे हो गये। अबकी नयी गोई (जोड़ी) बटेसुर के मेले से ले आवेगा। कहीं दो बीघे खेत और मलि गये, तो लखिा लेगा। रुपयों की क्या चति है! बनयि अभी से उसकी खुशामद करने लगे थे। ऐसा कोई न था जसिसे उसने गाँव में लड़ाई न की हो। वह अपने आगे कसिी को कुछ समझता ही न था।

एक दनि संध्या के समय वह अपने बेटे को गोद में लिए मटर की फलयिाँ तोड़ रहा था। इतने में उसे भेड़ों का एक झुंड अपनी तरफ आता दखिायी दयि। वह अपने मन में कहने लगा, इधर से भेड़ों के नकिलने का रास्ता न था। क्या खेत की मेंड़ पर से भेड़ों का झुंड नहीं जा सकता था? भेड़ों को इधर से लाने की क्या ज़रुरत थी? ये खेत को कुचलेंगी, चरेंगी। इसका दण्ड कौन देगा? मालूम होता है, बुद्धू गडरयि है, बच्चा को घमंड हो गया है, तभी तो खेतों के बीच से भेड़ें लयि चला आता है। जरा इसकी ढठिाई तो देखो। देख रहा है कि मैं खड़ा हूँ, फरि भी भेड़ों को लौटाता नहीं। कौन मेरे साथ कभी रअिायत की है कि मैं इसकी मुरौवत (भला) करूँ? अभी एक भेड़ मोल माँगू तो पाँच ही रुपये सुनावेगा। सारी दुनयि में चार-चार रुपये के कम्बल बकिते हैं, पर यह पाँच रुपये से नीचे की बात नहीं करता।

इतने में भेड़ें खेत के पास आ गयीं। झींगुर ने ललकारकर कहा — अरे, ये भेड़ें कहाँ लयि आते हो?

बुद्धू नम्र भाव से बोला — महतो, डाँड़े (खेत की सीमा) पर से नकिल जायेंगी, घूमकर जाऊँगा तो कोस-भर का चक्कर पड़ेगा।

झींगुर — तो तुम्हारा चक्कर बचाने के लिए मैं अपने खेत क्यों कुचलवाऊँ? डाँड़े ही पर से ले जाना है, तो और खेतों के डाँड़े से क्यों नहीं ले गये? क्या मुझे कोई चूड़ा-चमार समझ लयि है? या धन का घमंड हो गया है? लौटाओ इनको!

बुद्धू — महतो, आज नकिल जाने दो। फरि कभी इधर से आऊँ तो जो सजा चाहे देना।

झींगुर — कह दयि कि लौटाओ इन्हें! अगर एक भेड़ भी मेड़ पर आयी तो समझ लो, तुम्हारी खैर नहीं।

बुद्धू — महतो, अगर तुम्हारी एक बेल भी कसिी भेड़ के पैरों-तले आ जाये, तो मुझे बैठाकर सौ गालयिाँ देना।

बुद्धू बातें तो बड़ी नम्रता से कर रहा था, कतिु लौटाने में अपनी हेठी समझता था। उसने मन में सोचा, इसी तरह जरा-जरा धमकयिों पर भेड़ों को लौटाने लगा, तो फरि मैं भेड़ें चरा चुका। आज लौट जाऊँ, तो कल को कहीं नकिलने का रास्ता ही न मलिेगा। सभी रोब जमाने लगेंगे।

बुद्धू भी पोढ़ा आदमी था। 12 कोड़ी भेड़ें थीं। उन्हें खेतों में बठिाने के लिए फ़ी रात आठ आने कोड़ी मजदूरी मलिती थी, इसके उपरान्त दूध बेचता था; ऊन के कम्बल बनाता था। सोचने लगा-इतने गरम हो रहे हैं, मेरा कर ही क्या लेंगे? कुछ इनका दबैल तो हूँ नहीं। भेड़ों ने जो हरी-हरी पत्तयिाँ देखीं, तो अधीर हो गयीं। खेत में घुस पड़ीं। बुद्धू उन्हें डंडों से

comicsmylife.blogspot.in

मार-मारकर खेत के कनिारे हटाता था और वे इधर-उधर से नकिलकर खेत में जा पड़ती थीं। झींगुर ने आग होकर कहा — तुम मुझसे हेकड़ी जताने चले हो, तुम्हारी सारी हेकड़ी नकिाल दूँगा!

बुद्धू — तुम्हें देखकर चौंकती हैं। तुम हट जाओ, तो मैं सबको नकिाल ले जाऊँ।

झींगुर ने लड़के को तो गोद से उतार दयिा और अपना डंडा सँभाल कर भेड़ों पर पलि पड़ा। धोबी भी इतनी नर्दियता से अपने गधे को न पीटता होगा। कसिी भेड़ की टाँग टूटी, कसिी की कमर टूटी। सबने बें-बें का शोर मचाना शुरू कयिा। बुद्धू चुपचाप खड़ा अपनी सेना का वध्विंस अपनी आँखों से देखता रहा। वह न भेड़ों को हाँकता था, न झींगुर से कुछ कहता था, बस खड़ा तमाशा देखता रहा। दो मनिट में झींगुर ने इस सेना को अपने अमानुषकि पराक्रम से मार भगाया। मेष-दल का संहार करके वजिय-गर्व से बोला — अब सीधे चले जाओ! फरि इधर से आने का नाम न लेना।

बुद्धू ने आहत भेड़ों की ओर देखते हुए कहा — झींगुर, तुमने यह अच्छा काम नहीं कयिा। पछताओगे।

...

केले को काटना भी इतना आसान नहीं, जतिना कसिान से बदला लेना! उसकी सारी कमाई खेतों में रहती है, या खलहिानों में। कतिनी ही दैवकि और भौतकि आपदाओं के बाद कहीं अनाज घर में आता है। और जो कहीं इन आपदाओं के साथ वद्रिोह ने भी संधि कर ली तो बेचारा कसिान कहीं का नहीं रहता। झींगुर ने घर आकर दूसरों से इस संग्राम का वृत्तांत कहा, तो लोग समझाने लगे — झींगुर, तुमने बड़ा अनर्थ कयिा। जानकर अनजान बनते हो। बुद्धू को जानते नहीं, कतिना झगड़ालू आदमी है। अब भी कुछ नहीं बगिड़ा। जाकर उसे मना लो। नहीं तो तुम्हारे साथ सारे गाँव पर आफत आ जायेगी। झींगुर की समझ में बात आयी। पछताने लगा कि मैंने कहाँ से कहाँ उसे रोका। अगर भेड़ें थोड़ा-बहुत चर ही जातीं, तो कौन मैं उजड़ जाता था। हम कसिानों का कल्याण दबे रहने में ही है। ईश्वर को भी हमारा सरि उठाकर चलना अच्छा नहीं लगता। जी तो बुद्धू के घर जाने को न चाहता था, कतिु दूसरों के आग्रह से मजबूर होकर चला। अगहन (दसिंबर) का महीना था, कुहरा पड़ रहा था, चारों ओर अंधकार छाया हुआ था। गाँव से बाहर नकिला ही था कि सहसा अपने ऊख के खेत की ओर अग्नि की ज्वाला देखकर चौंक पड़ा। छाती धड़कने लगी। खेत में आग लगी हुई थी। बेतहाशा दौड़ा। मनाता जाता था कि मेरे खेत में न हो। पर ज्यों-ज्यों समीप पहुँचता था, यह आशामय भ्रम शांत होता जाता था। वह अनर्थ हो ही गया, जसिके नविारण के लिए वह घर से चला था। हत्यारे ने आग लगा ही दी, और मेरे पीछे सारे गाँव को चौपट कयिा। उसे ऐसा जान पड़ता था कि वह खेत आज बहुत समीप आ गया है, मानो बीच के परती खेतों का अस्तत्वि ही नहीं रहा! अंत में जब वह खेत पर पहुँचा, तो आग प्रचंड रूप धारण कर चुकी थी। झींगुर ने 'हाय-हाय' मचाना शुरू कयिा। गाँव के लोग दौड़ पड़े और खेतों से अरहर के पौधे उखाड़-उखाड़ कर आग को पीटने लगे। अग्नि-मानव-संग्राम (आग और मानव का युद्ध) का भीषण दृश्य उपस्थति हो गया। एक पहर तक हाहाकार मचा रहा। कभी एक पक्ष प्रबल होता था, कभी दूसरा। अग्नि-पक्ष के योद्धा मर-मरकर जी उठते थे और द्वगिुणति शक्ति से, रणोन्मत्त होकर शस्त्र-प्रहार करने लगते थे। मानव-पक्ष में जसि योद्धा की कीर्ति सबसे उज्ज्वल थी, वह बुद्धू था। बुद्धू कमर तक धोती चढ़ाये, प्राण हथेली पर लयि, अग्नरिाशि में कूद पड़ता था, और शत्रुओं को परास्त करके, बाल-बाल

comicsmylife.blogspot.in

बचकर, निकल आता था। अन्त में मानव-दल की विजय हुई; किन्तु ऐसी विजय जिस पर हार भी हँसती है। गाँव-भर की ऊख जलकर भस्म हो गयी, और ऊख के साथ किसानों की सारी अभिलाषाएँ भी भस्म हो गयीं।

...

आग किसने लगायी, यह खुला हुआ भेद था; पर किसी को कहने का साहस न होता था। कोई सबूत नहीं। प्रमाणहीन तर्क का मूल्य ही क्या? झींगुर को घर से निकलना मुश्किल हो गया। जिधर जाता, ताने सुनने पड़ते। लोग प्रत्यक्ष कहते थे — यह आग तुमने लगवायी। तुम्हीं ने हमारा सर्वनाश किया। तुम्हीं मारे घमंड के धरती पर पैर न रखते थे। आप-के-आप गये, अपने साथ गाँव-भर को डुबो दिया। बुद्धू को न छेड़ते तो आज क्यों यह दिन देखना पड़ता? झींगुर को अपनी बरबादी का इतना दुःख न था, जितना इन जली-कटी बातों का? दिन-भर घर में बैठा रहता। पूस (जनवरी) का महीना आया। जहाँ सारी रात कोल्हू चला करते थे, गुड़ की सुगंध उड़ती रहती थी, भट्ठियाँ जलती रहती थीं और लोग भट्ठियों के सामने बैठे हुक्का पिया करते थे, वहाँ सन्नाटा छाया हुआ था। ठंड के मारे लोग साँझ ही से किवाड़ें बंद करके पड़े रहते और झींगुर को कोसते। माघ (फरवरी) और भी कष्टदायक था। ऊख केवल धनदाता ही नहीं, किसानों का जीवनदाता भी है। उसी के सहारे किसानों का जाड़ा कटता है। गरम रस पीते हैं, ऊख की पत्तियाँ तापते हैं, उसके अगोड़े (पत्ते) पशुओं को खिलाते हैं। गाँव के सारे कुत्ते जो रात को भट्ठियों की राख में सोया करते थे, ठंड से मर गये। कितने ही जानवर चारे के अभाव से चल बसे। शीत का प्रकोप हुआ और सारा गाँव खाँसी-बुखार में ग्रस्त हो गया। और यह सारी विपत्ति झींगुर की करनी थी — अभागे, हत्यारे झींगुर की!

झींगुर ने सोचते-सोचते निश्चय किया कि बुद्धू की दशा भी अपनी ही सी बनाऊँगा। उसके कारण मेरा सर्वनाश हो गया और वह चैन की बंसी बजा रहा है? मैं भी उसका सर्वनाश करूँगा।

जिस दिन इस घातक कलह का बीजारोपण हुआ, उसी दिन से बुद्धू ने इधर आना छोड़ दिया था। झींगुर ने उससे रब्त-जब्त (मेल-जोल) बढ़ाना शुरू किया। वह बुद्धू को दिखाना चाहता था कि तुम्हारे ऊपर मुझे बिलकुल सन्देह नहीं है। एक दिन कम्बल लेने के बहाने गया। फिर दूध लेने के बहाने गया। बुद्धू उसका खूब आदर-सत्कार करता। चिलम तो आदमी दुश्मन को भी पिला देता है, वह उसे बिना दूध और शरबत पिलाये न आने देता। झींगुर आजकल एक सन (रेशे) लपेटनेवाली कल (फैक्टरी) में मजदूरी करने जाया करता था। बहुधा कई-कई दिनों की मजदूरी इकट्ठी मिलती थी। बुद्धू ही की तत्परता से झींगुर का रोजाना खर्च चलता था। अतएव झींगुर ने खूब रब्त-जब्त बढ़ा लिया। एक दिन बुद्धू ने पूछा — क्यों झींगुर, अगर अपनी ऊख जलानेवाले को पा जाओ, तो क्या करो? सच कहना।

झींगुर ने गम्भीर भाव से कहा — मैं उससे कहूँ, भैया तुमने जो कुछ किया, बहुत अच्छा किया। मेरा घमंड तोड़ दिया; मुझे आदमी बना दिया।

बुद्धू — मैं जो तुम्हारी जगह होता, तो बिना उसका घर जलाये न मानता।

झींगुर — चार दिन की जिंदगानी में वैर-विरोध बढ़ाने से क्या फायदा है? मैं तो बरबाद हुआ ही, अब उसे बरबाद करके क्या पाऊँगा?

बुद्धू — बस, यही आदमी का धर्म है। पर भाई क्रोध के बस में होकर बुद्धि उलटी हो जाती है।

...

comicsmylife.blogspot.in

फागुन (मार्च) का महीना था। कसिान ऊख बोने के लिए खेतों को तैयार कर रहे थे। बुद्धू का बाजार गरम था। भेड़ों की लूट मची हुई थी। दो-चार आदमी नत्यि द्वार पर खड़े खुशामदें कयिा करते। बुद्धू कसिी से सीधे मुँह बात न करता। भेड़ रखने की फीस दूनी कर दी थी। अगर कोई एतराज करता तो बेलाग कहता — तो भैया, भेड़ें तुम्हारे गले तो नहीं लगाता हूँ। जी न चाहे, मत रखो। लेकनि मैंने जो कह दयिा है, उससे एक कौड़ी भी कम नहीं हो सकती! गरज थी, लोग इस रुखाई पर भी उसे घेरे ही रहते थे, मानो पंडे कसिी यात्री के पीछे पड़े हों।

लक्ष्मी का आकार तो बहुत बड़ा नहीं, और जो है वह भी समयानुसार छोटा-बड़ा होता रहता है; यहाँ तक कि कभी वह अपना वरिाट् आकार समेट कर उसे कागज़ के चंद अक्षरों में छपिा लेती है। कभी-कभी तो मनुष्य की जह्विा पर जा बैठती है, आकार का लोप हो जाता है। कतिु उसके रहने को बहुत स्थान की ज़रुरत होती है। वह आयी और घर बढ़ने लगा। छोटे घर में उनसे नहीं रहा जाता। बुद्धू का घर भी बढ़ने लगा। द्वार पर बरामदा डाला गया, दो की जगह छः कोठरयिाँ बनवायी गयीं। यों कहिए कि मकान नये सरि से बनने लगा। कसिी कसिान से लकड़ी माँगी, कसिी से खपरों का आँवा (मट्टिी के बर्तन पकाने का भट्टा) लगाने के लिए उपले, कसिी से बाँस और कसिी से सरकंडे। दीवार की उठवायी देनी पड़ी। वह भी नकद नहीं; भेड़ों के बच्चों के रूप में। लक्ष्मी का यह प्रताप है। सारा काम बेगार में हो गया। अन्त में अच्छा-खासा घर तैयार हो गया। गृह-प्रवेश के उत्सव की तैयारयिाँ होने लगीं।

इधर झींगुर दनि-भर मजदूरी करता, तो कहीं आधा पेट अन्न मलिता। बुद्धू के घर कंचन बरस रहा था। झींगुर जलता था, तो क्या बुरा करता था! यह अन्याय कसिसे सहा जायेगा?

एक दनि वह टहलता हुआ चमारों के टोले की तरफ चला गया। हरहिर को पुकारा। हरहिर ने आकर 'राम-राम' की और चलिम भरी। दोनों पीने लगे। यह चमारों का मुखयिा बड़ा दुष्ट आदमी था। सब कसिान इससे थर-थर काँपते थे।

झींगुर ने चलिम पीते-पीते कहा — आजकल फाग-वाग (फागुन के उत्सव का गीत) नहीं होता क्या? सुनायी नहीं देता।

हरहिर — फाग क्या हो, पेट के धंधे से छुट्टी ही नहीं मलिती। कहो, तुम्हारी आजकल कैस नभिती है?

झींगुर — क्या नभिती है। नकटा जयिा बुरे हवाल! दनि-भर कल में मजदूरी करते हैं, तो चूल्हा जलता है। चाँदी तो आजकल बुद्धू की है। रखने को ठौर नहीं मलिता। नया घर बना, भेड़ें और ली हैं! अब गृहपरवेस की धूम है। सातों गाँवों में सुपारी जावेगी!

हरहिर — लक्ष्मी मैया आती है, तो आदमी की आँखों में सील आ जाता है। पर उसको देखो, धरती पर पैर नहीं रखता। बोलता है, तो ऐंठ कर बोलता है।

झींगुर — क्यों न ऐंठे, इस गाँव में कौन है उसकी टक्कर का? पर यार, यह अनीति नहीं देखी जाती। भगवान् दे तो सरि झुकाकर चलना चाहिए। यह नहीं कि अपने बराबर कसिी को समझे ही नहीं। उसकी डींग सुनता हूँ तो बदन में आग लग जाती है। कल का बाग़ी आज का सेठ। चला है हमीं से अकड़ने। अभी कल लँगोटी लगाये खेतों में कौए हँकाया करता था, आज उसका आसमान में दयिा जलता है।

हरहिर — कहो, तो कुछ उताजोग करूँ?

झींगुर — क्या करोगे? इसी डर से तो वह गाय-भैंस नहीं पालता।

comicsmylife.blogspot.in

हरहिर — भेड़ें तो हैं?

झींगुर — क्या बगला मारे पखना हाथ!

हरहिर — फरि तुम्हीं सोचो।

झींगुर — ऐसी जुगुत नकिालो कि फरि पनपने न पावे।

इसके बाद फुस-फुस करके बातें होने लगीं। वह एक रहस्य है कि भलाइयों में जतिना द्वेष होता है, बुराइयों में उतना ही प्रेम। वद्विान् वद्विान् को देखकर, साधु साधु को देखकर और कवि कवि को देखकर जलता है। एक-दूसरे की सूरत नहीं देखना चाहता। पर जुआरी जुआरी को देखकर, शराबी शराबी को देखकर, चोर चोर को देखकर सहानुभूति दखिाता है, सहायता करता है। एक पंडतिजी अगर अँधेरे में ठोकर खाकर गरि पड़ें, तो दूसरे पंडतिजी उन्हें उठाने के बदले दो ठोकरें और लगावेंगे कि वह फरि उठ ही न सकें। पर एक चोर पर आफत आयी देख दूसरा चोर उसकी आड़ कर लेता है। बुराई से सब घृणा करते हैं, इसलएि बुरों में परस्पर प्रेम होता है। भलाई की सारा संसार प्रशंसा करता है, इसलएि भलों में वरिोध होता है। चोर को मारकर चोर क्या पावेगा? घृणा। वद्विान् का अपमान करके वद्विान् क्या पावेगा? यश।

झींगुर और हरहिर ने सलाह कर ली। षड्यंत्र रचने की वधिि सोची गयी। उसका स्वरूप, समय और क्रम ठीक कयिा गया। झींगुर चला, तो अकड़ा जाता था। मार लयिा दुश्मन को, अब कहाँ जाता है!

...

दूसरे दनि झींगुर काम पर जाने लगा, तो पहले बुद्धू के घर पहुँचा। बुद्धू ने पूछा — क्यों, आज काम पर नहीं गये क्या?

झींगुर — जा तो रहा हूँ। तुमसे यही कहने आया था कि मेरी बछयिा को अपनी भेड़ों के साथ क्यों नहीं चरा दयिा करते। बेचारी खूँटे से बँधी-बँधी मरी जाती है। न घास, न चारा, क्या खलिावें?

बुद्धू — भैया, मैं गाय-भैंस नहीं रखता। चमारों को जानते हो, एक ही हत्यारे होते हैं। इसी हरहिर ने मेरी दो गउएँ मार डालीं। न जाने क्या खलिा देता है। तब से कान पकड़े कि अब गाय-भैंस न पालूँगा। लेकनि तुम्हारी एक ही बछयिा है, उसका कोई क्या करेगा। जब चाहो, पहुँचा दो।

यह कहकर बुद्धू अपने गृहोत्सव का सामान उसे दखिाने लगा। घी, शक्कर, मैदा, तरकारी सब मँगा रखा था। केवल सत्यनारायण की कथा की देर थी। झींगुर की आँखें खुल गयीं। ऐसी तैयारी न उसने स्वयं कभी की थी और न कसिी को करते देखी थी। मजदूरी करके घर लौटा, तो सबसे पहला काम जो उसने कयिा वह अपनी बछयिा को बुद्धू के घर पहुँचाना था। उसी रात को बुद्धू के यहाँ सत्यनारायण की कथा हुई। ब्रह्मभोज भी कयिा गया। सारी रात वप्रिों का आगत-स्वागत करते गुज़री। भेड़ों के झुंड में जाने का अवकाश ही न मलिा। प्रातःकाल भोजन करने उठा ही था (क्योंकि रात का भोजन सबेरे मलिा था) कि एक आदमी ने आकर खबर दी — बुद्धू, तुम यहाँ बैठे हो, उधर भेड़ों में बछयिा मरी पड़ी है। भले आदमी, उसकी पगहयिा (पशुओं के गले में बांधे जाने वाली रस्सी) भी नहीं खोली थी?

बुद्धू ने सुना और मानो ठोकर लग गयी। झींगुर भी भोजन करके वहीं बैठा था। बोला — हाय-हाय, मेरी बछयिा! चलो, जरा देखूँ तो। मैंने तो पगहयिा नहीं लगायी थी। उसे भेड़ों में पहुँचाकर अपने घर चला गया। तुमने यह पगहयिा कब लगा दी?

comicsmylife.blogspot.in

बुद्धू — भगवान् जाने जो मैंने उसकी पगहयिा देखी भी हो। मैं तो तब से भेड़ों में गया ही नहीं।

झींगुर — जाते न तो पगहयिा कौन लगा देता? गये होगे, याद न आती होगी।

एक ब्राह्मण — मरी तो भेड़ों में ही न? दुनयिा तो यही कहेगी कि बुद्धू की असावधानी से उसकी मृत्यु हुई, पगहयिा किसी की हो।

हरहिर — मैंने कल साँझ को इन्हें भेड़ों में बछयिा को बाँधते देखा था।

बुद्धू — मुझे?

हरहिर — तुम नहीं लाठी कंधे पर रखे बछयिा को बाँध रहे थे?

बुद्धू — बड़ा सच्चा है तू! तूने मुझे बछयिा को बाँधते देखा था?

हरहिर — तो मुझ पर काहे बगिड़ते हो भाई? तुमने नहीं बाँधी, नहीं सही।

ब्राह्मण — इसका निश्चय करना होगा। गोहत्या का प्रायश्चति करना पड़ेगा। कुछ हँसी-ठट्ठा है?

झींगुर — महाराज, कुछ जान-बूझकर तो बाँधी नहीं।

ब्राह्मण — इससे क्या होता है? हत्या इसी तरह लगती है; कोई गऊ को मारने नहीं जाता।

झींगुर — हाँ, गऊओं को खोलना-बाँधना है तो जोखमि का काम।

ब्राह्मण — शास्त्रों में इसे महापाप कहा है। गऊ की हत्या ब्राह्मण की हत्या से कम नहीं।

झींगुर — हाँ, फरि गऊ तो ठहरी ही। इसी से इसका मान होता है। जो माता, सो गऊ; लेकनि महाराज, चूक हो गयी। कुछ ऐसा कीजएि कि थोड़े में बेचारा नपिट जाये।

बुद्धू खड़ा सुन रहा था कि अनायास मेरे सरि हत्या मढ़ी जा रही है। झींगुर की कूटनीति समझ रहा था। मैं लाख कहूँ, मैंने बछयिा नहीं बाँधी, मानेगा कौन? लोग यही कहेंगे कि प्रायश्चति से बचने के लएि ऐसा कह रहा है।

ब्राह्मण देवता का भी उसका प्रायश्चति कराने में कल्याण होता था, भला ऐसे अवसर पर कब चूकने वाले थे। फल यह हुआ कि बुद्धू को हत्या लग गयी। ब्राह्मण भी उससे जले हुए थे। कसर नकिालने की घात मलिी। तीन मास का भक्षिा दंड दयिा, फरि सात तीर्थस्थानों की यात्रा; उस पर 500 वप्रिों (ब्राह्मण) का भोजन और 5 गउओं का दान। बुद्धू ने सुना, तो बधयिा (जैसे नपुंसक कर दयिा हो) बैठ गयी। रोने लगा, तो दंड घटाकर दो मास कर दयिा गया। इसके सविा कोई रआियत नहीं हो सकी। न कहीं अपील, न कहीं फरयिाद! बेचारे को यह दंड स्वीकार करना पड़ा।

...

बुद्धू ने भेड़ें ईश्वर को सौंपी। लड़के छोटे थे। स्त्री अकेली क्या-क्या करेगी! जाकर द्वारों पर खड़ा होता और मुँह छपिाये हुए कहता — गाय की बाछी दयिो बनवास। भक्षिा तो मलि जाती, कतिु भक्षिा के साथ दो-चार कठोर अपमानजनक शब्द भी सुनने पड़ते। दनि को जो-कुछ पाता, वही शाम को किसी पेड़ के नीचे बनाकर खा लेता और वहीं पड़ रहता। कष्ट की तो उसे परवा न थी, भेड़ों के साथ दनि-भर चलता ही था, पेड़ के नीचे सोता ही था, भोजन भी इससे कुछ ही अच्छा मलिता होगा, पर लज्जा थी भक्षिा माँगने की। वशिेष करके जब कोई कर्कशा यह व्यंग्य कर देती थी कि रोटी कमाने का अच्छा ढंग नकिाला है, तो उसे हार्दकि वेदना होती थी। पर करे क्या?

comicsmylife.blogspot.in

दो महीने के बाद वह घर लौटा। बाल बढ़े हुए थे। दुर्बल इतना, मानो 60 वर्ष का बूढ़ा हो। तीर्थयात्रा के लिए रुपयों का प्रबन्ध करना था, गडरियों को कौन महाजन कर्ज़ दे! भेड़ों का भरोसा क्या? कभी-कभी रोग फैलता है, तो रात भर में दल-का-दल साफ हो जाता है। उस पर जेठ (जून) का महीना, जब भेड़ों से कोई आमदनी होने की आशा नहीं। एक तेली राजी भी हुआ, तो दो आना (साढ़े बारह पैसे) रुपये ब्याज पर। आठ महीने में ब्याज मूल के बराबर हो जायगा। यहाँ कर्ज़ लेने की हिम्मत न पड़ी। इधर दो महीनों में कितनी ही भेड़ें चोरी चली गयी थीं। लड़के चराने ले जाते थे। दूसरे गाँव वाले चुपके से एक-दो भेड़ें किसी खेत या घर में छिपा देते और पीछे मारकर खा जाते। लड़के बेचारे एक तो पकड़ न सकते, और जो देख भी लेते तो लड़ें क्योंकर! सारा गाँव एक हो जाता था। एक महीने में तो भेड़ें आधी भी न रहेंगी। बड़ी विकट समस्या थी। विवश होकर बुद्धू ने एक बूचड़ को बुलाया और सब भेड़ें उसके हाथ बेच डालीं। 500 रु. हाथ लगे। उसमें से 200 रु. लेकर तीर्थयात्रा करने गया। शेष रुपये ब्रह्मभोज आदि के लिए छोड़ गया।

बुद्धू के जाने पर उसके घर में दो बार सेंध लगी। पर यह कुशल हुई कि जगाहट हो जाने के कारण रुपये बच गये।

...

सावन (जुलाई) का महीना था। चारों ओर हरियाली छायी हुई थी। झींगुर के बैल न थे। खेत बटाई पर दे दिये थे। बुद्धू प्रायश्चित्त से निवृत्त हो गया था और उसके साथ ही माया के फन्दे से भी। न झींगुर के पास कुछ था, न बुद्धू के पास। कौन किससे जलता और किस लिए जलता?

सन की कल बन्द हो जाने के कारण झींगुर अब बेलदारी का काम करता था। शहर में एक विशाल धर्मशाला बन रही थी। हजारों मजदूर काम करते थे। झींगुर भी उन्हीं में था। सातवें दिन मजदूरी के पैसे लेकर घर आता था और रात-भर रहकर सबेरे फिर चला जाता था।

बुद्धू भी मजदूरी की टोह में यहीं पहुँचा। जमादार ने देखा दुर्बल आदमी है, कठिन काम तो इससे हो न सकेगा, कारीगरों को गारा देने के लिए रख लिया। बुद्धू सिर पर तसला रखे गारा लेने गया, तो झींगुर को देखा। 'राम-राम' हुई, झींगुर ने गारा भर दिया, बुद्धू उठा लाया। दिन-भर दोनों चुपचाप अपना-अपना काम करते रहे।

संध्या समय झींगुर ने पूछा — कुछ बनाओगे न?

बुद्धू — नहीं तो खाऊँगा क्या?

झींगुर — मैं तो एक जून (समय) चबेना (चने खाना) कर लेता हूँ। इस जून सत्तू पर काट देता हूँ। कौन झंझट करे?

बुद्धू — इधर-उधर लकड़ियाँ पड़ी हुई हैं, बटोर लाओ। आटा मैं घर से लेता आया हूँ। घर ही पर पिसवा लिया था। यहाँ तो बड़ा महँगा मिलता है। इसी पत्थर की चट्टान पर आटा गूँधे लेता हूँ। तुम तो मेरा बनाया खाओगे नहीं, इसलिए तुम्हीं रोटियाँ सेंको, मैं बना दूँगा।

झींगुर — तवा भी तो नहीं है?

बुद्धू — तवे बहुत हैं। यही गारे का तसला माँजे लेता हूँ।

आग जली, आटा गूँधा गया। झींगुर ने कच्ची-पक्की रोटियाँ बनायीं। बुद्धू पानी लाया। दोनों ने लाल मिर्च और नमक से रोटियाँ खायीं। फिर चिलम भरी गयी। दोनों आदमी पत्थर की सिलों पर लेटे, और चिलम पीने लगे।

बुद्धू ने कहा — तुम्हारी ऊख में आग मैंने लगायी थी।

comicsmylife.blogspot.in

झींगुर ने वनिोद के भाव से कहा — जानता हूँ।

थोड़ी देर के बाद झींगुर बोला — बछयिा मैंने ही बाँधी थी और हरहिर ने उसे कुछ खलिा दयिा था।

बुद्धू ने भी वैसे ही भाव से कहा — जानता हूँ।

फरि दोनों सो गये।

...

comicsmylife.blogspot.in